Date 28/05/2020

# प्राथमिक क्रियाएं एवं स्थानीयकरण

Ravi Kant Anand H.O.D
Dept of Geography



प्राथमिक क्रियाएं प्राकृतिक संसाधनों के प्रत्यक्ष उपयोग पर आधारित होती है और इसमें पारम्परिक तकनीक या उत्पादन विधि का उपयोग होता है। इसमें आधुनिक यंत्रों एवं विधियों का अभाव होता है। अतः पिछड़ी अर्थव्यवस्था के प्रदेश में सामान्यतः इसका विकास होता है। प्रारंभिक आर्थिक वातावरण से यह संबंधित होते हैं। प्राकृतिक वनों की उपलब्धता, जनसंख्या की वनों पर निर्भर, जलीय क्षेत्र की उपलब्धता, जनसंख्या की वनों पर निर्भरता, जलीय क्षेत्र की उपलब्धता पशु अनुकूल जलवायु प्रारंभिक क्रियाओं के आधार हैं। इसमें बगैर पूँजी निवेश के मानव श्रम द्वारा ही उत्पादन होता है।

## खाद्य संग्रह और आखेट

एकत्रीकरण और आखेट

विश्व में पिछड़ी हुई अर्थव्यवस्था की जनजातियों के द्वारा ही मुख्यतः खाद्य संग्रह और आखेट कार्य किया जाता है; लेकिन व्यवसायिक स्तर पर भी एकत्रीकरण उद्योग का विकास हुआ है। वनों की उपलब्धता वाले प्रदेश वन पदार्थों की एकत्रीकरण की क्रिया दो प्रकार की होती है —

1. जीवन निर्वाह के लिए एकत्रित करना - यह अविकसित प्रदेशों में होता है।

2. व्यापार के लिए एकत्रित करना - यह विकसित प्रदेशों में होता है।

उष्ण कटिबंधीय वनों में एकत्रीकरण उद्योग :- उष्ण कटिबंधीय एवं मानसूनी वनों से फल के रूप में केला, आम, जामुन, बेर, महुआ, खजूर, ताड़, नारियल जैसे फल प्राप्त होते हैं। इसके अतिरिक्त गोंद एवं लाह (लाख) बबूल, कीकर, ढाक, सेमल एवं विभिन्न वृक्षों से प्राप्त होते हैं।

चर्मरोधक तत्व टेनिन वृक्षों की छाल से प्राप्त होते हैं। भारत में हरे, बहेरा, आंवला के फल प्रमुख हैं। बबूल की छाल, किकर, प्लाल सेभी टेनिन प्राप्त होते हैं।

कारनौबा - ताड़ की पत्तियों के रस से मोम तैयार की जाती है। रबर की वृक्ष से बलाता तैयार किया जाता है। जोगोल्फ की गोंद का कपड़ा बनाने में उपयोग किया जाता है।

चीपाट नामक वृक्ष से चिकिल (chewing gum) दूधिया रस निकलता है, जिससे चबाने वाला गोंद चिकिल प्राप्त होता है। चिकिल का निर्यात U.S.A एवं कई विकसित देशों में किया जाता है।

तेलताड़ का एकत्रीकरण मुख्यतः पश्चिम अफ्रीका के उष्ण आर्द्र वनों मुख्यतः नाइजिरिया, घाना, सेनेगल आदि देशों में किया जाता है। यहाँ से विश्व का 2/3 तेलताड़ का निर्यात होता है। बंगली तेलताड़ का दूसरा प्रमुख क्षेत्र दक्षिण-पूर्व एशिया में इण्डोनेशिया एवं मलेशिया

है।

औषधियों में सिनकोना की वृक्ष की छाल से कुनैन बनाया जाता है। जावा में रोपन कृषि द्वारा भी सिनकोना उगाया जाता है। कपूर वृक्ष जापान, ताईवान, दक्षिणी चीन के वनों में 1000m से कम ऊँचे ढालों पर भारी वर्षा के क्षेत्र में आते हैं। मंगेला पौधों की छाल जूट की तरह मोटे वस्त्र बनाने में प्रयोग की जाती है।

समशीतोष्ण तथा उपोष्ण कटिबंध में एकत्रीकरण उद्योग :-

यहां एकत्रीकरण उष्ण कटिबंध की तरह विस्तृत नहीं फिर भी कई पदार्थ प्राप्त होते हैं। चर्मशोधन पदार्थ टेनिन ओक, हेमलाक, चेस्टनट वृक्षों से प्राप्त होता है। भू-मध्यसागरीय प्रदेश में सुमैक वृक्ष की छाल एवं टर्किश ओक की फल उत्तम चर्मशोधक हैं।

दक्षिण अमेरिका में अर्जेंटीना एवं पराग्वे के वनों में क्वेब्राको नामक वृक्ष से क्वेब्राको नामक चर्मशोधन पदार्थ निकाला जाता है। यहां से क्वेब्राको का रस तथा लट्ठा U.S.A तथा यूरोपीय देशों को निर्यात किया जाता है।

चीड़ के वृक्ष से रेशिन एवं तारपीन एकत्रित किया जाता है। रेशिन को गर्म करके तारपीन एकत्रित किया जाता है। रेशिन को गर्म करके तारपीन

निकाला जाता है, शेष भाग बेरोजा कहलाता है।

आखेट उद्योग :-

आखेट जीवन निर्वाहन के रूप में जनजातियों के द्वारा किया जाता है। यह व्यवसाय मानव द्वारा वातावरण के साथ अत्यंत साधारण समायोजन का द्योतक है। आखेट से बहुत ही विरल और थोड़ी सी जनसंख्या का पालन होता है।

प्रमुख आखेट क्षेत्र

1. कनाडा के टुण्ड्रा एवं टैगा प्रदेश में एस्कीमो द्वारा।

2. अलास्का की रेड इंडियन जनजाति द्वारा।

3. उत्तरी साइबेरिया की जीमोयड, चुकची, तंगु, युकागिर, याकूत, कोरयाक द्वारा।

4. अर्जेंटीना एवं चिली के दक्षिण में याहगन जातियों द्वारा

5. अमेजन बेसिन में अमेरिण्ड जातियां कियागुवा द्वारा।

6. अफ्रीका की कांगो बेसिन में पिग्मी द्वारा।

7. दक्षिण-पश्चिम अफ्रीका के कालाहारी का

बुशमैन द्वारा ।

8. मलाया के लंमांग और सफाई जनजातियों द्वारा ।

9. बोर्नियो में पुनाम जनजाति द्वारा ।

10. न्यूगिनी का पापुआन द्वारा ।

11. उत्तरी आस्ट्रेलिया की आदिम जातियां माओरी द्वारा

## पशुचारण आर्थिक क्रिया

घास के मैदानों एवं मरुस्थलों में चलवाली पशुचारक पशुओं के झुंडों के साथ घूमते हैं।

विश्व के प्रमुख पशुचारण क्षेत्र

विश्व के वैसे प्रदेश जो कृषि फसलों के अनुपयोगी हैं, वन नहीं हैं। और जहां घास, स्थल और अर्ध मरुस्थलीय क्षेत्र हैं।

पशुचारण के क्षेत्र हैं।

उष्ण कटिबंधीय घास के मैदान
(कड़ी, लम्बी, गुच्छ वाली)

(i) सवाना — सूडान
(ii) लानोस — वेनेजुएला
(iii) कम्पोस — ब्राजील

(iv) पटाना - श्रीलंका

मध्य अक्षांशीय घास के मैदान (छोटी, मुलायम बीछी हुई)

प्रेयरी घास — U.S.A, कनाडा
स्टेपी — यूरेशिया
डाउन्स — आस्ट्रेलिया
वेल्ड — अफ्रीका
पुस्तेज — हंगरी

पशुचारण के प्रमुख क्षेत्र

* उष्ण कटिबंधीय घास स्थल सेलवाना घास के प्रदेश में पशुचारण होता है।

* पश्चिमी अफ्रीका में (मौरीतानिया से लेकर मरुस्थल तक

* समशीतोष्ण घास या मध्य अक्षांशीय घास का क्षेत्र।

* आर्कटिक महासागर का तटवर्ती क्षेत्र। यहां टुण्ड्रा में रेंडियर को पाला जाता है।

* पूर्वी - अफ्रीका के पठार पर मसाई लोग लींग वाले पशु (गाय, भेड़) पालते हैं। ये मांस खाते हैं।

* अरब मरुस्थलय का खबाला (बद्दू) लोग ऊंट

पालते हैं।
ऊंटनी का दुध भोजन में प्रयोग करते हैं।

* मध्य एशिया मे किरगीज, कज्जाक, कालमुक एवं मंगोलिया के निवासी घोड़े भेड़, बकरियां पालते हैं।

* उत्तरी लाइबेरिया के कुंरू लोग बारह सिंगे पालते हैं।

* न्यूजीलैण्ड के उत्तरी द्वीप के तराना क्षेत्र मे विश्व के सभी क्षेत्रों की तुलना में दुधारू पशुओं की संख्या सर्वाधिक है।

घास का मैदान एवं पशुचारण
घास के मैदान मे मुख्य व्यवसाय पशुपालन है। यह दो क्षेत्रों मे होता है।

1- उष्ण कटिबंधीय घास के मैदान।
2- शीतोष्ण कटिबंधीय घास के मैदान।

1. उष्ण कटिबंधीय घास के मैदान
यह विषुवतीय वर्षा वनों एवं मरुस्थलों के बीच स्थित है। यहां औसत वार्षिक वर्षा 100 cm जो मुख्यतः गर्मियों में होती है। यहां की घास को अफ्रीका मे सवाना कहते हैं। इसका सर्वाधिक विस्तार सुडान में है। यह घास मोटी, सुन्दरी एवं 3 m तक लम्बी होती है। इसकी लम्बाई विषुवतीय प्रदेश से गर्म

मरुस्थल की ओर जाने पर घटती है। इसमे पोषक तत्व कम पाए जाते है। यहां गाय, बैल, बड़ी संख्या मे पाले जाते है।

इनके क्षेत्र :- दक्षिण अमेरिका मे वेनेजुएला के ओरीनिको नदि बेसिन मे ब्राजील की उच्च भूमि मे कम्पोज, श्रीलंका मे पटना, अफ्रीका मे जायरे बेसिन के उत्तर दक्षिण सवाना मे तथा उत्तरी आस्ट्रेलिया मे यह पाया जाता है।

2. शीतोष्ण कटिबंधीय घास के मैदान
यहां छोटी घास पाई जाती है। यह मध्य अंक्षाशो के 25-75 सेमी वर्षा वाले क्षेत्रों मे आर्द्र जलवायु एवं शीत मरुस्थलीय जलवायु के मध्ये के क्षेत्र मे विकसित होती है।

यह स्टेपी (यूरेशिया), प्रेयरी जलवायु (U.S.A, कनाडा), डाउन्स (आस्ट्रेलिया), वेल्ड (दक्षिण अफ्रीका), पुस्तेज (हंगरी) के क्षेत्र है। यह घास पोषक होता है। इसमे स्टेपी की ऊँचाई 10-20 cm चटाईनुमा आवरण मे है। स्टेपी की ऊंचाई विस्तार उत्तरी गोलार्द्ध मे सर्वाधिक है।

प्रेयरी स्टेपी की अपेक्षतः अधिक लंबी घासो वाली अपेक्षाकृत आर्द्र प्रदेश मे स्थित है। इसकी घास की लम्बाई 45 - 60 cm होती है।

पशुचारण एवं पशुपालन वाले भूमियों की महत्वपूर्ण आर्थिक क्रियाएं हैं। जहां अधिक वर्षा होती है। वहां की लम्बी घास में गाय, बैल जैसे पशु पाले जाते हैं। कम वर्षा और छोटी घास में भेड़ पाला जाता है। जहां वर्षा और भी कम है वहां बकरियां पाली जाती हैं।

पशुचारण के प्रकार

चलवाली पशुचारण

इसका उद्देश्य जीवन निर्वाह होता है। इसके प्रमुख क्षेत्र हैं:-

1. 5°N से 50°N अक्षांश के मध्य (उत्तरी अफ्रीका के सहारा मरुस्थल से पूर्वी अफ्रीका के तटीय भाग, अरब प्रायद्वीप, इराक, ईरान, अफगानिस्तान होता हुआ चीन तथा मंगोलिया तक 56000 km लंबे भू-भाग पर)।

2. यूरेशिया के टुण्ड्रा के दक्षिणी सीमांत भाग पर।

3. दक्षिणी - पश्चिमी अफ्रीका तथा मालागासी के पश्चिमी भाग में।

टुण्ड्रा क्षेत्र में पशुचारण ग्रीष्म ऋतु में उत्तर के पर्वतीय ढालों पर तथा शीत ऋतु में दक्षिण के कोणधारी वनों की ओर ऋतु प्रवास करते हैं।

जम्मू - कश्मीर एवं हिमाचल के पशुचारक

भी ऋतु प्रवास करते हैं। कश्मीर और गुर्जर गाय, बैल, भैंस पालते हैं और बकरवाल भेड़ और बकरियां पालते हैं।

किर्गिस्तान, कजाकस्तान, उजबेकिस्तान जैसे क्षेत्रों में चलवासी पशुपालकों को स्थाई रूप से कृषि क्षेत्रों में बसाया गया है। यहां के घास के मैदानों में कपास की खेती की जा रही है।

पूर्वी अफ्रीका के पठार पर घास का क्षेत्र विक्टोरिया झील के से समुद्री तट तक है। यहां मसाई लोग रहते हैं। 1902 में ब्रिटिश शासकों ने 4000 वर्ग किमी क्षेत्र को मसाईयों का जनजातीय क्षेत्र घोषित कर दिया था। ये क्षेत्र केन्या और तंजानिया में हैं। यहां गाय और बैलों की संख्या अधिक है। समाइयों को स्थाई रूप से बसाने का कार्य केन्या सरकार कर रही है।

व्यापारिक पशुपालन

यह व्यापारिक दृष्टि से किया जाता है। इसके निम्न क्षेत्र हैं :-

1. पश्चिमी कनाडा, पश्चिमी U.S.A. (प्रेयरी क्षेत्र)
2. वेनेजुएला का सीमित क्षेत्र।
3. ब्राजील के पठारी भाग से अर्जेंटीना के दक्षिणी सीमा तक।
4. दक्षिण अफ्रीका का वेल्ड क्षेत्र।
5. आस्ट्रेलिया एवं न्यूजीलैण्ड का घास भूमि (न्यूजीलैण्ड में कैंटबरी का मैदान।
6. विश्व में व्यापारिक पशुपालन के

अन्तर्गत गाय, बैल सर्वाधिक संख्या में पाए जाते हैं।

7. कैस्पियन सागर के पूर्व तथा अरब सागर के उत्तर का विस्तृत भाग।

मत्स्यन क्रियाएं

मत्स्यन विश्व की प्रमुख आर्थिक क्रिया है। इसके लिए निम्न अनुकूल दशाएं होती हैं।

1. छिछला समुद्री तट जिसकी गहराई 100 फैदम तक हो, जहां सूर्य की किरणें तल पहुंच सके। चूंकि प्लैंकटन का विकास यहीं होता है।

2. मछलियां अपने अंडे छिछले एवं शांत समुद्र में देती हैं।

3. नदियों के मुहानों पर नदियों द्वारा नाइट्रोजन एवं खनिज लवण लाए जाते हैं जो प्लैंकटन के लिए आवश्यक होता है।

4. ठंडे गर्म गर्म समुद्री जल के मिलने के क्षेत्र में प्लैंकटन का विकास अधिक होता है।

5. शीतोष्ण जलवायु मछलियों के लिए अधिक उपयुक्त होती है।

6. उष्ण कटिबंधीय समुद्रों में भी मछलियां पाई जाती हैं लेकिन यह कम स्वादिष्ट एवं कुछ विषैली भी होती हैं।

7. ठंडे जल में गर्म जल की अपेक्षतः अधिक मछलियां मिलती हैं, यहां एक प्रजाति की मछलियां झुण्ड में तैरती रहती हैं।

नोट :- प्रशांत महासागर में जमुरी खाद्य जीव का सामंजस्य एवं शोषण क्षमता सर्वाधिक है।

विश्व के मत्स्य प्रदेश —

A. उच्च मध्य अक्षांशीय जमुद्र - यहां सर्वाधिक मछलियां पकड़ी जाती हैं। विश्व के सम्पूर्ण मत्स्य उत्पादन का 73% होता है। यहां प्रमुख क्षेत्र हैं —

1. उत्तरी प्रशांत महासागर में ताइवान से बेरिंग सागर तक का क्षेत्र।

2. उत्तरी-पूर्वी प्रशान्त में कैलिफोर्निया से बेरिंग सागर तक का क्षेत्र।

3. उत्तरी-पूर्वी अटलांटिक में पुर्तगाल से बेरेंट सागर तक का क्षेत्र।

4. उत्तरी-पश्चिमी अटलांटिक में लेब्राडोर एवं न्यू फाउंडलैण्ड से उद्योग बड़े पैमाने पर किया जाता है।

5. यहां पर्सनेट और ट्राल नेट जैसे जालों का प्रयोग किया जाता है।

B. मध्य अक्षांशीय समुद्र
यह मत्स्यन का दूसरा प्रमुख स्रोत है। यहां निम्न क्षेत्र हैं।

1. प्रशान्त महासागर में चीन एवं जापान का तटीय क्षेत्र, पीरू एवं चिली का तटीय क्षेत्र, कैलिफोर्निया का तटीय क्षेत्र।

2. अटलांटिक में न्यूयार्क तटीय क्षेत्र तथा भूमध्य सागर एवं काला सागर।

C. उच्च कटिबंधीय समुद्री क्षेत्र
यहां अधिक मछलियां नहीं मिलती तथा यहां मत्स्य उद्योग अधिक विकसित अवस्था में नहीं है। यहां हिन्द महासागर एवं प्रशान्त महासागर के मिलने के क्षेत्र में, पूर्वी द्वीप समूह के क्षेत्र में मैक्सिको की खाड़ी, कैरिबियन सागर में मत्स्यन किया जाता है।

तलाश्रयी मछली
यह समुद्र के नितल में पाई जाती है। ये झुण्ड में नहीं रहती।
उदाहरण – हेलिबुत, हेडकॉक, कलाउन्डिस

मत्स्य का विश्व वितरण एवं प्रमुख क्षेत्र

1. प्रशांत महासागर का उत्तरी पश्चिमी क्षेत्र
यहां समुद्र के नितल में पाई जाती है। ये झुण्ड में नहीं रहती। उदाहरण –

हैलीबुत, हेडकॉक, फ्लाउन्डर्स।

मत्स्य का विश्व वितरण एवं प्रमुख क्षेत्र:

1. प्रशान्त महासागर का उत्तरी पश्चिमी क्षेत्र
यहां बेरिंग सागर से दक्षिण में फिलिपाइंस तक का क्षेत्र मुख्य है। यहां सर्वाधिक मछली जापान द्वारा पकड़ी जाती है। जापान विश्व का सबसे बड़ा मछली का आयातक भी है।
इसका कारण जीवन में मछली का अधिक उपयोग है।
कुछ मछली (खारे जल एवं मीठे जल) चीन में अधिकतर पाया जाता है।

2. अटलांटिक महासागर का उत्तर-पश्चिम भाग
यहां कनाडा एवं U.S.A की सीमा पर चौड़ा महाद्वीपीय मग्न तट पाया जाता है, जिस पर कई बैंक स्थित है। इनमें न्यूफाउंडलैण्ड के पास - ग्राउ बैंक और दक्षिण में जार्ज बैंक स्थित है। यहां ठंडी लेब्राडोर एवं गर्म गल्फ स्ट्रीम जलधारा मिलती है।
यहां अधिकतर मछलियां न्यूफाउंडलैण्ड एवं नोवा स्कोशिया के तटीय क्षेत्र में मिलता है। यहां पर्च, कॉड, हेरिंग मुख्यतः पकड़ी जाती है।

नोट - चेसापीक खाड़ी ओयस्टर मछली के लिए प्रसिद्ध है। यहां दक्षिण में अपेक्षाकृत गर्म भागों में श्रिंप पकड़ी जाती है। यहां मत्स्य बंदरगाह है।

हैलिफैक्स (नोवा स्कोशिया मे) सेंटजान्स (न्यू फाउंडलैण्ड मे), बोस्टन, न्यूयॉर्क।

3. अटलांटिक महासागर का उत्तर-पूर्वी क्षेत्र
अटलांटिक वृत्त के उत्तर से दक्षिण मे भूमध्यसागर के सीमा तक का क्षेत्र। उत्तर सागर का डोगर बैंक यहां स्थित है। यहां नार्वे प्रमुख उत्पादक देश है। यहां की तट रेखा कटी-फटी (दंतुरीत) है। यहां कॉड एवं हैरिंग मछलियां पकड़ी जाती है।
नार्वे मे मत्स्य उद्योग के विकास का मुख्य कारण दंतुरीत तट तथा कृषि भूमि की कमी है। अन्य देशो मे स्वीडन डेनमार्क, नियरलैण्ड, U.S.A प्रमुख है।

4. प्रशांत महासागर का उत्तर-पूर्वी क्षेत्र

- यहां अलास्का से कैलिफोर्निया तट का क्षेत्र प्रमुख है।

- यहां मत्स्य बंदरगाह एन्करेज (दक्षिण अलास्का), वैंकुवर (कनाडा), सैन फ्रांसिस्को (कैलिफोर्निया) मे है।

- प्रशान्त महासागर मे मत्स्यन का विकास हो रहा है तथा अटलांटिक महासागर मे कमी आई है।

- दक्षिणी महासागरो मे मत्स्यन मे कमी आई

है।

- उत्तरी गोलार्द्ध में लगभग 75% मछलियां पकड़ी जाती हैं।

- विश्व में सारडाइन, हैरिंग सर्वाधिक पकड़ी जाती हैं।

- ह्वेल सबसे अधिक जापान, कनाडा, नार्वे तट पर ठंडे महासागरों में पाई जाती है।

- नार्वे के मत्स्य बंदरगाह - ट्रोमसो, उत्तर में ट्रांडहीम है।

- U.K. का मत्स्य बंदरगाह - एबरडीन (उत्तर-पूर्व में) है।